B.A. History Hon's Part: II

Paper: III, Unit: I, Date: Lecture No.: 1
2. 11. 2020

Lesson: भूमि अनुदान

भारतीय इतिहास में राजा द्वारा ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिए जाने का प्रथम साक्ष्य सातवाहन काल का मिलता है। सातवाहन राजाओं ने दक्कन की जन जातियों को ब्राह्मणवादी सामाजिक संरचना में समायोजन, ब्राह्मण धर्म के प्रसार और सर्वोपरि राज्य के अन्दरूनी भागों में राज सत्ता के प्रभाव विस्तार के उद्देश्य से ब्राह्मणों को राज्य के सुदूर हिस्सों में भूमि अनुदान देकर बसाया। मौर्योत्तर काल में इसे राज्य के हित में मानकर अन्य राजवंशों ने राजनीतिक विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति पर अप्रत्यक्ष लगाम लगाने के उद्देश्य से सातवाहनों का अनुकरण किया। गुप्त काल में भूमि अनुदान ने एक प्रथा का रूप ले लिया। गुप्त सम्राटों और उनके अधीन राजाओं ने प्रत्येक विशेष राजकीय अवसरों पर और सामान्य स्थिति में भी बड़े पैमाने पर भूमि अनुदान प्रदान किए। भूमि अनुदान के रूप में ब्राह्मणों को एक-दो से लेकर पाँच-दस गाँव दान में दिए जाते थे, जो कर मुक्त होते थे। भूमि अनुदान के साथ-साथ राजा अपने शासकीय अधिकारों के कुछ हिस्सों का भी हस्तांतरण करते थे। उदाहरणस्वरूप अनुदत्त गाँव की शांति-व्यवस्था तथा पुलिस एवं न्याय संबंधी अधिकार भी ब्राह्मणों को अब प्रदान किए जाने लगे। परिणामस्वरूप भारतीय समाज में ब्राह्मणीकरण और सामन्तीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रारम्भिक मध्यकाल में भूमि अनुदान की प्रथा का आम चलन हो गया और भारत में ब्राह्मणवाद तथा सामन्तवाद का उत्कर्ष हुआ। जब ब्राह्मणों के अलावे देवालयों, मठों और प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारियों को क्षेत्रीय राजवंशों और उनके अधीन महासामन्तों ने भी बड़े पैमाने पर भूमि अनुदान प्रदान किए।

भूमि अनुदान पत्र प्रायः ताम्र पत्रों पर उत्कीर्ण करवा कर गृहस्थाओं को प्रदान किए जाते थे। अनुदान का स्वरूप शाश्वत था। अनुदत्त भूमि पर गृहिता की नहीं बल्कि उसके वंशधरों का सदा के लिए अधिकार हो जाता था। इसके लिए 'यावद चन्द्र दिवाकरौ' जैसी शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। प्रारम्भिक मध्य काल में अनुदान भोगियों को प्राप्त गाँवों में पर्याप्त कृषि भूमि के स्वामित्व कर उगाही, शान्ति व्यवस्था कायम करने, न्याय प्रदान करने और प्राप्त गाँवों के भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करने के अधिकार के अलावे वर्ण-व्यवस्था आधारित समाज को पुख्ता करने का दायित्व भी होता था।

प्रारंभिक मध्यकाल में क्षेत्रीय राजवंशों के उदयोन्मुख द्वारा संचालित युद्ध अभियानों एवं धावों और दस्ते में भारी संख्या में लड़ाकू जनजातीय कबीलों तथा राजपूतों जत्थों के संक्रमण एवं नये-नये स्थानों पर उपनिवेशन एवं स्थानीय सत्ता केन्द्रों के निर्माण के कारण अराजकता, अव्यवस्था, लूट-पाट, हिंसा एवं राज्य सत्ता का क्षरण बड़े पैमाने पर होने लगा। पुराणों में इसे कलियुग की संज्ञा प्रदान की गई है। इसे ब्राह्मणवादी धार्मिक एवं सामाजिक संरचना और सैन्य शक्ति के द्वारा ही पटरी पर लाया जा सकता था। यही कारण है कि इस अवधि में ब्राह्मणों के साथ-साथ सैन्य पदाधिकारियों को बड़े पैमाने पर भूमि अनुदान दिए गए। साथ ही राजाओं के अलावे उनके बड़े सामन्तों ने भी अपने स्वामी का अनुकरण किया। इस प्रकार सामन्तीकरण और उप सामन्तीकरण की प्रक्रिया तेज हुई जिसके कई ऐतिहासिक परिणाम हुए। इस प्रथा ने राज्य शक्ति को गले

ही ह्रास हुआ हो, परन्तु एक नये युग का प्रादुर्भाव भी हुआ।

प्रारम्भिक मध्य काल में भूमि अनुदान को राजधर्म का प्रमुख हिस्सा मान लिया गया, हलांकि यह परिस्थिति जन्य मजबूरी थी। भूमि दान को धर्म एवं पुण्य से भी जोड़ दिया गया। भूमि अनुदान के माध्यम से राजा जहाँ एक ओर यश-कीर्ति का लाभ अर्जित कर सकता था, वहीं अपने दान भोगियों के माध्यम से, राज्य एवं प्रजा पर अपने नियंत्रण को भी पुख्ता कर सकता था। राज्य के अन्दर शान्ति-व्यवस्था, सुरक्षा, न्याय, एवं निर्माण कार्य उगाही का इससे इतर कोई कारगर उपाय नहीं था। इस अवधि में भूमि अनुदान प्रथा की लोकप्रियता के यही प्रमुख कारण थे।

इस प्रथा के कारण क्षेत्रीय एवं आंचलिक संस्कृतियों का निर्माण हुआ। प्रारम्भिक मध्य काल में नगरों के पतन की भरपाई ग्रामीण अर्थ-प्रणाली और संस्कृति ने की। कृषि क्षेत्र का विस्तार हुआ। शूद्रों को भारतीय इतिहास में पहली बार कृषि का अधिकार मिला। अनुदान भोगी स्वयं कृषि कर्म नहीं कर सकते थे। उन्होंने अपनी भूमि किसानों को पट्टे पर दिया। परिणामतः एक विशाल एवं शक्तिशाली कृषक वर्ग का उदय हुआ। तंत्रवाद, कौलिक धर्म एवं ग्रामीण धर्म का विकास इसी कौलिक परिस्थिति में हुआ। ब्राह्मणों ने जनजातीयों को वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत समायोजित किया। कई जनजातीय कर्मकाण्डों के अध्यालीकरण के द्वारा तंत्रवाद के उदय का पथ प्रशस्त हुआ। सामाजिक धार्मिक जीवन में देवालयों तथा मठों की भूमिका बढ़ी जिन्हें क्षेत्रीय राजाओं और बड़े सामन्तों ने भूमि अनुदान देकर समृद्ध किया था। अनुदान भोगियों ने अपने अनुदान प्राप्त इलाके की बोलियों का संवर्द्धन कर उन्हें भाषा रूप में विकसित किया। अनुग्राहिकाओं ने स्थानीय भाषा ही नहीं, अपितु कला के विविध रूपों का मानकीकरण एवं शास्त्रीकरण किया। जाहिर है कि भूमि अनुदान की प्रथा ने एक सर्वथा नवीन युग का निर्माण किया, जिसे सामन्तवाद का युग कहा जाता है, जिसकी अपनी विशिष्टताएँ इसे प्राचीन और मध्य काल के बीच नए काल के रूप में पहचान देती हैं। इसीलिए इसे प्रारम्भिक मध्य काल या संक्रमण काल कहा जाता है जबकि स्थानीय, आंचलिक एवं क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय हुआ।

Dr. शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर